एक-शलजम का बगीचा

एक परिवार था जिसमें माँ, पिता, एक बड़ी लड़की, एक बीच का लड़का और एक बहुत छोटी लड़की थी. वे एक छोटे घर में रहते थे, जहाँ उनके पास बगीचे के लिए सिर्फ छोटी सी जगह थी.

"कोई बात नहीं," माँ ने कहा. "हमारे पास केवल एक ही बीज है, वो भी शलजम का बीज."

"कोई बगीचा न होने से कम-से-कम एक शलजम का बगीचा ही बेहतर है," पिता ने कहा. "मैं एक-शलजम के बगीचे के लिए मिट्टी खोदूंगा."

"मैं एक-शलजम के बगीचे में बीज बोऊंगी," माँ ने कहा.

"मैं एक-शलजम के बगीचे में पानी डालूंगी," बड़ी लड़की ने कहा. "मैं उसमें हर दिन पानी दूंगी."

"मैं एक-शलजम के बगीचे की निंदाई करूंगा," लड़के ने कहा. "मैं उसकी हर दिन निंदाई करूंगा."

"मै क्या करूं?" छोटी लड़की ने पूछा.



"अरे, तुम कुछ भी करने के लिए अभी बहुत छोटी हो," उन्होंने कहा. लेकिन छोटी लड़की को इस पर विश्वास नहीं हुआ. "मैं भी ज़रूर कुछ कर सकती हूँ," उसने कहा. लेकिन अभी उसे यह नहीं पता था कि वो क्या करे.

फिर पिता ने मिट्टी खोदी और माँ ने बीज बोया. हर दिन बड़ी लड़की ने एक-शलजम के बगीचे में पानी दिया. हर दिन लड़के ने उसकी निंदाई की.



और हर दिन छोटी लड़की शलजम के पास जाकर फुसफुसाई. उसने कहा, "छोटे शलजम उगो, बड़े हो. छोटे शलजम बड़े हो और स्वादिष्ट बनो."

फिर छोटा शलजम बढ़ा. वो बड़ा और बड़ा होता गया.

"बड़े हो, छोटे शलजम," छोटी लड़की फुसफुसाई. फिर शलजम बड़ा, और बड़ा होता गया.

"बड़े हो जाओ, छोटे शलजम," छोटी लड़की फुसफुसाई. फिर शलजम बड़ा और विशाल हो गया.





एक दिन पिता जब काम से घर लौटे तो उन्होंने देखा शलजम इतना बढ़ गया था कि वो उनके घर से भी ज़्यादा ऊँचा हो गया था.

फिर उन्होंने अपने पूरे परिवार को बुलाया और कहा, "अब हमें शलजम को उखाड़ना चाहिए. फिर उन्होंने शलजम पकड़ा और उसे ज़ोर से खींचा. लेकिन उस विशाल शलजम को वो उखाड़ नहीं पाए.

"मैं मदद करूँगी," माँ ने कहा. माँ ने पिता को पकड़ा, जिन्होंने शलजम को पकड़ा, और फिर उन्होंने ज़ोर से खींचा. लेकिन वे दोनों उस बड़ा विशाल शलजम को उखाड़ नहीं पाए.





"मैं मदद करूंगी," बड़ी लड़की ने कहा. फिर लड़की ने अपनी माँ को पकड़ा, माँ ने पिता को पकड़ा, जिन्होंने शलजम को पकड़ा, और फिर उन्होंने ज़ोर से खींचा. लेकिन वे तीनों मिलकर भी उस बड़ा विशाल शलजम को उखाड़ नहीं पाए.

फिर लड़के ने कहा, "मैं मदद करूंगा." फिर लड़के ने अपनी बहन को पकड़ा, लड़की ने अपनी माँ को पकड़ा, माँ ने पिता को पकड़ा, जिन्होंने शलजम को पकड़ा, और फिर उन्होंने ज़ोर से खींचा. लेकिन वे चारों मिलकर भी उस विशाल शलजम को उखाड़ नहीं पाए.

"मैं आपकी मदद करूंगी," अंत में छोटी लड़की ने कहा.

"अरे, तुम मदद नहीं कर सकती हो," उन्होंने कहा. "तुम अभी बहुत छोटी हो."

"हाँ, मैं मदद कर सकती हूँ," छोटी लड़की ने कहा. फिर वो शलजम के पास गई और उसपर हाथ फेरते हुए बोली, "छोटे शलजम, अब तुम बड़े हो गए हो. अब तुम पक गए हो. अब तुम्हारा मिट्टी से बाहर आने का समय हो गया है. छोटे शलजम, ऊपर आओ."





फिर छोटी लड़की ने अपने भाई को पकड़ा, लड़के ने अपनी बहन को पकड़ा, लड़की ने अपनी माँ को पकड़ा, माँ ने पिता को पकड़ा, जिन्होंने शलजम को पकड़ा, और फिर सबने ज़ोर से खींचा.

सबने मिलकर ज़ोर से खींचा. और इस बार वो विशाल शलजम उखड़कर बाहर आ गया.

और जब उन्होंने उसे खाया, तो वो बेहद स्वादिष्ट था. कम-से-कम, उन्हें वो बहुत स्वादिष्ट लगा.



अंत